# प्रकाशन निदेशालय ने लगाया दोहरा शतक

पंतनगर। 14 अक्टूबर, 2009। विश्वविद्यालय के प्रकाशन निदेशालय ने 200वीं पुस्तक 'फसल–सब्जी–फलः रोग पहचान व प्रबन्ध' के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी में 200 पुस्तकें प्रकाशित करने का कीर्तिमान स्थापित किया है। इन प्रकशनों में कृषि, पशुचिकित्सा, गृह विज्ञान, इंजीनियरिंग, वानिकी, औद्यानिकी एवं मत्स्य विज्ञान से सम्बन्धित तकनीकी पुस्तकें सम्मिलित हैं। किसान मेले में निदेशालय द्वारा अपने प्रकाशनों की बिक्री के लिए लगाये गये स्टाल में इस नई पुस्तक की बड़ी संख्या में बिक्री हुयी। किसानों द्वारा इस पुस्तक को अत्यधिक पसन्द किया गया तथा 4 दिनों के अंदर इस पुस्तक की सौ से अधिक प्रतियाँ बिक गयीं।

प्रकाशन निदेशालय के प्रभारी अधिकारी डा. नरेश कुमार ने बताया कि निदेशालय की अन्य कई पुस्तकों की भी किसानों में लगातार मांग बनी हुयी है। इनमें से लगभग एक दर्जन पुस्तकों के 2–5 संस्करणों का प्रकाशन किया जा चुका है जिनमें व्यवाहारिक फल–सब्जी परिरक्षण (चतुर्थ संशोधित संस्करण), सब्जियों की खेती और व्यवसाय (पंचम संशोधित संस्करण), डेरी पशु प्रबन्ध (तृतीय संशोधित संस्करण), सगंधी पौधों की खेती एवं व्यवसाय (द्वितीय संशोधित संस्करण), सब्जी और फल उत्पादन : समस्याएं एवं समाधान (द्वितीय संशोधित संस्करण) सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त भारत की प्रमुख फसलें नामक पुस्तक की लोकप्रियता को देखते हुए निदेशालय द्वारा इसका छठा संस्करण तैयार किया जा रहा है। कृषि आधारित व्यवसायों से सम्बन्धित पुस्तकें यथा व्यवसायिक मुर्गी पालन, व्यवसायिक पुष्पोत्पादन, पौधशाला प्रबन्धन, मधुमक्खी पालन, पशुधन एवं कुक्कुट पालन, भेड़ पालन, बकरी पालन इत्यादि भी किसानों में काफी लोकप्रिय हुयी हैं।

डा. नरेश कुमार के अनुसार केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन कार्यरत विज्ञान एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के आर्थिक सहयोग से पंत विवि में स्थापित प्रकाशन निदेशालय द्वारा वर्ष 1969 से अब तक हिन्दी में तकनीकी पुस्तकों को प्रकाशित कराना एक गर्व का विषय है। प्रकाशन में क्रम में उपयोगी पुस्तकों की भाषा, विषय–वस्तु व उसकी मांग के अनुरूप बनाने का भरसक प्रयास करने का ही नतीजा है कि अब तक निदेशालय द्वारा प्रकाशित 23 पुस्तकों को राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त होने का भी श्रेय है।